ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय-   हिन्दी

व्याकरण

दिनांक—29/07/2020

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

आपके समक्ष पुन: उपस्थित हूँ व्याकरण पुनरावृत्ति के साथ, जो आपकी परीक्षा के लिए उपयोगी है ।

एन सी इ आर टी पर आधारित

2. <u>तत्पुरुष समास</u>

वह समास, जिसका उत्तर पद या अंतिम पद प्रधान हो । अर्थात् प्रथम पद गौण हो और उत्तरपद की प्रधानता हो। जैसे-राजकुमार सख्त बीमार था । इस वाक्य में समस्तपद 'राजकुमार' जिसका विग्रह है-राजा का कुमार। इस विग्रह पद में 'राजा' पहला पद और 'कुमार' (पुत्र) उत्तर पद है। अब प्रश्न है-कौन बीमार था, राजा या कुमार?

उत्तर मिलता है कुमार । स्पष्ट है कि उत्तरपद की ही प्रधानता है।

कुछ और उदाहरण को देखा जाए-

राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। (उत्तरपद प्रधान)

*तत्पुरुष समास के उपभेद पूर्वपद में लगे हुए कारक-चिह्नों के नाम से किए जाते हैं;

जैसे-

1.कर्म तत्पुरुष ('को' का लोप)

2. (ख) करण तत्पुरुष ('से', 'के द्वारा' का लोप)

(ग) संप्रदान तत्पुरुष (के लिए' का लोप)

(घ) अपादान तत्पुरुष से' (अलग होने के अर्थ में) का लोप)

(ङ) संबंध तत्पुरुष ('का, की, के' का लोप)

(च) अधिकरण तत्पुरुष ('में, पे, पर' का लोप)

इसके अलावा तत्पुरुष समास के अन्य उपभेद भी हैं जो इस प्रकार है –

कर्मधारय समास, द्विगु समास ,अलुक समास , नञ् समास, मध्यम लोपी आदि तत्पुरुष में ही आते हैं परंतु आपको यहाँ पर मैं सिर्फ कर्मधारय द्विगु और नञ् समास के बारे में बता रही हूँ ।

<u>कर्मधारय एवं द्विगु समास-</u>

कर्मधारय एवं द्विगु समास में पूर्वपद और उत्तरपद में अधिकतर विशेषण और विशेष्य का संबंध होता है। इन दोनों समासों में ही उत्तरपद प्रधान होता है;

जैसे -दशानन- दस आनन

नीलकमल-नीला कमल

अंतर केवल इतना है कि कर्मधारय में विशेषण 'गुणवाचक' होता है और द्विगु समास में पहला पद 'संख्यावाचक' होता है।

<u>कर्मधारय समास के उदाहरण-</u>

समस्तपद-	विग्रह
नीलगगन-	नीला है जो गगन
महाजन -	महान है जो जन
पीतांबर -	पीला है जो अंबर
अन्धकूप-	अंधा है जो कुआँ

नञ् तत्पुरुष -जिस समस्त पद में पहला पद निषेधात्मक हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं; जैसे

समस्तपद - नञ् तत्पुरुष जिस समस्त पद में पहला पद निषेधात्मक हो, उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे

समस्तपद - विग्रह

असंभव - न संभव

अनंत - न अंत

अनाथ - न नाथ

अनचाही -न चाही

अनावश्यक - न आवश्यक

दी गई अध्ययन सामग्री को अपनी उत्तर पुस्तिका में नोट करें एवं पढ़ें।

कुमारी पिंकी “कुसुम”